आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 1/मार्च 2022
Received:03/02/2022; Published:24/03/2022

धूसर आईने

-डॉ.मुक्ता
ई मेल- drmukta8@gmail.com

कुछ हाथों में आईने हैं... धूसर
वे देख रहे हैं अपने चेहरे
गढ़ रहे हैं परिभाषाएं
.....आजादी की
लोग सड़कों पर नींद में खोए हैं
गड्डमड्ड हो रही हैं मुट्ठियाँ
उलटा लटका है बारूद का पेड़ फैलती जा रही है गंध
समझना होगा-
आजादी और आजादी का अर्थ।

****